IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निपुण भारत मिशन के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता की स्थिति का अध्ययन

[1]मन्तोष कुमार, [2]प्रो. राजशरण शाही

[1]शोधार्थी, [2]विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता शिक्षाशास्त्र विभाग

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय

(केंद्रीय विश्वविद्यालय) लखनऊ -226025, उ. प्र.

सार :

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य निपुण भारत मिशन के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता के स्तर का अध्ययन करना तथा विभिन्न प्रकार के विद्यालयों, विशेष रूप से पीएम श्री विद्यालयों एवं अन्य सरकारी विद्यालयों के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन कक्षा 5 के विद्यार्थियों पर केंद्रित है, ताकि यह आकलन किया जा सके कि वे कक्षा 3 तक अपेक्षित आधारभूत अधिगम स्तर को प्राप्त कर पाए हैं या नहीं। इस शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। डेटा संग्रहण हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया गया, जिसमें साक्षरता एवं संख्यात्मकता से संबंधित प्रश्न सम्मिलित थे। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों की सहायता से किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की साक्षरता एवं समग्र शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रवृत्ति देखी गई, विशेषकर पीएम श्री विद्यालयों के विद्यार्थियों में अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन पाया गया। इसके विपरीत, संख्यात्मकता के क्षेत्र में अपेक्षित स्तर की प्रगति समान रूप से नहीं पाई गई, जो एक महत्वपूर्ण शैक्षिक चुनौती को दर्शाती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि निपुण भारत मिशन साक्षरता एवं शैक्षिक उपलब्धि के विकास में प्रभावी सिद्ध हो रहा है, किन्तु संख्यात्मकता के क्षेत्र में अधिक सुदृढ़ हस्तक्षेप एवं रणनीतियों की आवश्यकता है। यह अध्ययन शिक्षा नीति-निर्माताओं, शिक्षकों एवं प्रशासकों के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मुख्य शब्द :

मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता, निपुण भारत मिशन, प्राथमिक विद्यालय, पीएम श्री विद्यालय , शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना :

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास की आधारशिला होती है। एक देश की समृद्धि, नवाचार, और समानता उसकी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण और विशाल देश में शिक्षा प्रणाली को सुलभ बनाना तो आवश्यक है ही, परंतु उसकी गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) में दक्षता, उनकी आगे की शिक्षा की दिशा और सफलता को निर्धारित करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में यह समस्या लंबे समय से देखी जा रही है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों, जैसे असर रिपोर्ट (2024) से यह स्पष्ट हुआ है कि कक्षा 5 तक पहुँचने वाले अनेक विद्यार्थी कक्षा 2 एवं 3 स्तर की पुस्तकें पढ़ने और बुनियादी गणितीय क्रियाएँ करने में सक्षम नहीं हैं। यह स्थिति शिक्षा की गुणवत्ता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती है (असर, 2024)।

यह स्थिति देश की शिक्षा प्रणाली में मौलिक सुधार की आवश्यकता को इंगित करती है। इसी चुनौती के समाधान हेतु भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (नैप 2020) के अंतर्गत आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है। नीति में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि कक्षा 3 तक सभी बच्चों को एफएलएन में दक्ष बनाना अनिवार्य है (नैप, 2020, पैरा2.1)। इसी दिशा में वर्ष 2021 में निपुण भारत मिशन का शुभारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य वर्ष 2026-27 तक सभी बच्चों को पढ़ने, लिखने एवं गणना करने में निपुण बनाना है (शिक्षा मंत्रालय, 2021)।

इस मिशन को समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत लागू किया जा रहा है, जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षण अधिगम सामग्री का विकास, मूल्यांकन प्रक्रिया, और सामुदायिक सहभागिता पर विशेष बल दिया गया है (शिक्षा मंत्रालय, 2021: निपुण भारत गाइडलाइन) इस मिशन की प्रगतिऔर प्रभावशीलता को और अधिक सशक्त बनाने के लिए भारत सरकार ने वर्ष2022 में पीएम श्री (प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) योजना की घोषणा की। इसके अंतर्गत चयनित विद्यालयों को मॉडल स्कूल के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ गुणवत्तापूर्णअधोसंरचना, प्रशिक्षित शिक्षक, डिजिटल संसाधन और आधुनिक शिक्षण विधियाँ उपलब्ध कराई जा रही हैं । पीएम श्री विद्यालयों को शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने का केंद्र बिंदु माना जा रहा है। ऐसे में यह शोध अत्यंत आवश्यक हो जाता है की इन स्कूलों में एफएलएन मिशन का क्या प्रभाव पड़ा है और क्या वे अन्य सामान्य सरकारी विद्यालयों की तुलना में बच्चों को अधिक सक्षम बना पा रहे हैं। एफएलएन की अवधारणा केवल एक शैक्षणिक विचार नहीं है, बल्कि यह बच्चों के संज्ञानात्मक, भाषाई, और तार्किक विकास का आधार है। यूनेस्को की रिपोर्ट(2022) के अनुसार "बुनियादी शिक्षा भविष्य की सभी शिक्षाओं का प्रवेश द्वार है." जब बच्चा प्राथमिक स्तर पर पढ़ने-लिखने और गणना करने में दक्ष नहीं होता, तो उसकी आगे की शैक्षिक यात्रा और जीवन कौशल दोनों प्रभावित होते हैं। इसलिए एफएलएन मिशन और पीएम श्री जैसी पहलें बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक महत्वपूर्णकदम हैं।

निपुण भारत मिशन केवल एक शैक्षिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह शिक्षा के समग्र परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसमें शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास, सतत मूल्यांकन, डिजिटल मॉनिटरिंग एवं सामुदायिक सहभागिता जैसे महत्वपूर्ण घटकों को शामिल किया गया है (Mahato & Dhillon, 2025)। शोध से यह भी स्पष्ट होता है कि एफएलएन कौशल न केवल शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं, बल्कि भविष्य के कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए भी आधार तैयार करते हैं (Chandra, 2024)।

इसके अतिरिक्त, भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई पीएम श्री योजना के अंतर्गत चयनित विद्यालयों को मॉडल स्कूल के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहाँ आधुनिक संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक एवं नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियाँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। इन विद्यालयों को FLN लक्ष्यों की प्राप्ति में अग्रणी भूमिका निभाने वाला माना जा रहा है (PM SHRI, 2022)।

विभिन्न शोध अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ है कि निपुण भारत मिशन का प्रभाव सकारात्मक रहा है। उदाहरणस्वरूप, Sarkar & Gaur (2025) के अध्ययन में पाया गया कि FLN कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों की पठन एवं गणितीय क्षमताओं में सुधार किया है। वहीं Maqbool et al. (2024) ने FLN को एक ऐसी आधारभूत अवधारणा बताया है, जो संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को प्रभावित करती है। इसी प्रकार Swargiary (2024) ने शिक्षा में असमानताओं, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी एवं भाषाई विविधता को एफएलएन के प्रमुख अवरोधक कारकों के रूप में पहचाना।

हालांकि, इन प्रयासों के बावजूद जमीनी स्तर पर कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। असर रिपोर्ट एवं अन्य शोधों से यह स्पष्ट होता है कि सभी राज्यों एवं विद्यालयों में एफएलएन लक्ष्यों की प्राप्ति समान रूप से नहीं हो पाई है (थामारसेरी और श्रीलक्ष्मी, 2025)। विशेष रूप से संख्यात्मकता के क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति अभी भी सीमित है।

"निपुण भारत मिशन के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता का अध्ययन"— अत्यंत प्रासंगिक है। इस अध्ययन में विशेष रूप से कक्षा 5 के विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया गया है, ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि वे कक्षा 3 तक अपेक्षित एफएलएन दक्षताओं को प्राप्त कर पाए हैं या नहीं। साथ ही, इस शोध में पीएम श्री विद्यालय एवं अन्य सरकारी विद्यालयों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे यह समझा जा सके कि संसाधन एवं नीतिगत समर्थन का विद्यार्थियों के अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ता है।

यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि नीतिगत एवं व्यावहारिक स्तर पर भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इससे शिक्षकों, शिक्षा प्रशासकों एवं नीति-निर्माताओं को यह समझने में सहायता मिलेगी कि निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन में कहाँ सफलता प्राप्त हुई है और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता केवल शिक्षा का एक घटक नहीं है, बल्कि यह बच्चों के समग्र विकास, जीवन कौशल एवं भविष्य की सफलता की कुंजी है। निपुण भारत मिशन एवं संबंधित पहलों के माध्यम से भारत इस दिशा में एक सशक्त कदम उठा रहा है, और प्रस्तुत शोध इसी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक प्रयास है।

साहित्य समीक्षा:

लक्ष्मण एवं राजेश (2022) ने प्रारंभिक शिक्षा में साक्षरता एवं संख्यात्मकता बढ़ाने वाली रणनीतियों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि गतिविधि-आधारित शिक्षण, स्थानीय भाषा का उपयोग एवं प्रशिक्षित शिक्षक बच्चों के अधिगम को बेहतर बनाते हैं। फ़ातिमा (2024) ने उत्तर प्रदेश में निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि स्पष्ट दिशा-निर्देश, डिजिटल निगरानी एवं नियमित फील्ड विज़िट से एफएलएन लक्ष्यों में प्रगति हो रही है। नईम (2024) ने FLN की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया और पाया कि मिशन की नीयत सकारात्मक है, परंतु क्रियान्वयन में कमियाँ जैसे—रटंत शिक्षण एवं कमजोर बच्चों के लिए अलग वर्ग जैसी समस्याएँ मौजूद हैं। तिवारी एवं कुआद (2022) ने भाषा साक्षरता पर बल देते हुए बताया कि केवल अक्षर पहचान पर्याप्त नहीं है, बल्कि सार्थक पठन ही वास्तविक साक्षरता है।

मोहोपात्रा एवं सिंह (2024) ने दीक्षा प्लेटफॉर्म आधारित एफएलएन प्रशिक्षण का अध्ययन किया और पाया कि इससे शिक्षकों के ज्ञान, शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन कौशल में सुधार हुआ, हालांकि संसाधन एवं समय की कमी चुनौतियाँ रहीं।माझी (2022) ने एफएलएन प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया। परिणामों में पूर्व-परीक्षण की तुलना में पश्चात-परीक्षण में उल्लेखनीय सुधार पाया गया, जिससे प्रशिक्षण की उपयोगिता सिद्ध हुई।तुंगोए (2024) ने NEP 2020 के अंतर्गत पाठ्यक्रम में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण किया और पाया कि नई नीति ने एफएलएन, ECCE एवं तकनीकी समावेशन को बढ़ावा दिया है।चंद्रा (2024) ने एफएलएन की स्थिति एवं नीतिगत प्रयासों का विश्लेषण करते हुए बताया कि प्रगति हो रही है, लेकिन शिक्षक प्रशिक्षण एवं पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में असमानताएँ अभी भी चुनौती हैं।वत्स एवं मलिक (2024) ने उत्तर प्रदेश में एफएलएन स्तर का मूल्यांकन किया और पाया कि कुछ जिलों का प्रदर्शन बेहतर है, जबकि कुछ अभी भी पीछे हैं।स्वार्गियारी (2024) ने एफएलएन की स्थिति का विश्लेषण करते हुए शिक्षा में असमानता, भाषाई विविधता एवं संसाधनों की कमी को प्रमुख बाधाएँ बताया।

मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता शिक्षा की आधारशिला मानी जाती है। चंद्रा (2024) के अनुसार एफएलएन कौशल केवल शैक्षिक सफलता के लिए ही नहीं, बल्कि भविष्य के रोजगार के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि प्रारंभिक कक्षाओं में विकसित की गई भाषाई एवं गणितीय क्षमताएँ आगे चलकर संज्ञानात्मक विकास, समस्या समाधान तथा नवाचार क्षमता को प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार स्वार्गियारी (2024) ने भारत में एफएलएन की स्थिति का विश्लेषण करते हुए यह पाया कि गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा के अभाव में सीखने के स्तर में असमानताएँ उत्पन्न होती हैं, जो आगे चलकर शैक्षिक पिछड़ेपन का कारण बनती हैं।

महतो एवं धिल्लों (2025) ने अपने अध्ययन में पाया कि NEP 2020 और निपुण भारत मिशन के बीच स्पष्ट नीतिगत समन्वय है, जो FLN लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक है। उन्होंने यह भी बताया कि मिशन के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण, मूल्यांकन प्रणाली तथा अधिगम सामग्री में सुधार किया गया है। मकबूल, शेख एवं अन्नायत (2024) ने एफएलएन को

एक समग्र अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया, जो केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन से जुड़ी हुई है।

सरकार एवं गौर (2025) द्वारा किए गए केस स्टडी में पाया गया कि निपुण भारत मिशन के अंतर्गत संचालित कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों की पठन एवं गणना क्षमता में उल्लेखनीय सुधार किया है। विशेष रूप से जिन विद्यालयों में संसाधनों एवं प्रशिक्षण की उपलब्धता अधिक थी, वहाँ परिणाम बेहतर पाए गए। इसी प्रकार तिवारी एवं कुवाड़ (2022) ने भाषा साक्षरता के संदर्भ में अध्ययन करते हुए पाया कि मातृभाषा आधारित शिक्षण पद्धति एफएलएन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सतपथी, दिव्या एवं प्रधान (2025) के अध्ययन में यह पाया गया कि SCERT द्वारा विकसित एफएलएन वर्कबुक्स विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को बढ़ाने में प्रभावी सिद्ध हुई हैं।

सेठी एवं बेहरा (2025) ने ओडिशा के कटक जिले में विद्यार्थियों की एफएलएन क्षमताओं का आकलन किया और पाया कि विद्यार्थियों में साक्षरता की तुलना में संख्यात्मकता का स्तर अपेक्षाकृत कम है। इसी प्रकार Pratham Education Foundation द्वारा प्रकाशित असर रिपोर्ट (2024) में भी यह पाया गया कि कक्षा 5 के अनेक विद्यार्थी कक्षा 2 स्तर के पाठ को पढ़ने एवं सरल गणितीय क्रियाएँ करने में सक्षम नहीं हैं। यह स्थिति एफएलएन लक्ष्यों की प्राप्ति में चुनौतियों को दर्शाती है। थमरास्सेरी एवं श्रीलेख्मी (2025) ने असर रिपोर्टों का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि केवल नामांकन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि अधिगम परिणामों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। घोष एवं सरकार (2023) ने अपने अध्ययन में यह बताया कि भारत में एफएलएन को एक महत्वपूर्ण नीतिगत प्राथमिकता के रूप में स्थापित किया गया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सरकार द्वारा किए गए हस्तक्षेपों ने इस क्षेत्र में जागरूकता एवं संसाधनों की उपलब्धता को बढ़ाया है।

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि एफएलएन शिक्षा का आधार है और निपुण भारत मिशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। विभिन्न अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि इस मिशन का प्रभाव सकारात्मक है, परंतु संख्यात्मकता के क्षेत्र में अभी भी सुधार की आवश्यकता है।

अतः यह शोध एफएलएन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु मार्गदर्शन करता है।

शोध का महत्व :

भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया "निपुण भारत मिशन" (पठन-समझ और अंकगणित में दक्षता के लिए राष्ट्रीय पहल) प्राथमिक स्तर की शिक्षा में गुणवत्ता सुधार की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य कक्षा 3 तक के सभी बच्चों को आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ एल एन) में निपुण बनाना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं लागू की गई हैं, जिनमें विशेष रूप से पीएम श्री विद्यालयों की स्थापना की गई है, जिन्हें मॉडल और नेतृत्वकारी विद्यालय के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह अध्ययन इन विद्यालयों और अन्य सरकारी विद्यालयों के बीच एफएलएन की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे यह मूल्यांकन किया

जा सकेगा कि क्या विशेष संसाधनों, प्रशिक्षण एवं नीति-समर्थन से लैस विद्यालयों में छात्रों की दक्षता वाकई बेहतर हो रही है। यह शोध इस दृष्टिसे अत्यंत महत्वपूर्ण है कि यह जमीनी स्तर पर एफएलएन मिशन के प्रभाव और उसकी सफलता को आंकने का अवसर प्रदान करता है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि नीतिगत प्रयासों का कितना प्रभाव बच्चों की बुनियादी शैक्षिक क्षमताओं पर पड़ा है। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत विशेष रूप से कक्षा 5 के विद्यार्थियों का मूल्यांकन करके यह जाना जाएगा कि वे कक्षा 3 तक की पुस्तकें पढ़ने, लिखने और गणितीय प्रश्नों को हल करने में सक्षम हैं या नहीं। यह न केवल लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रगति को दिखाएगा, बल्कि यह भी बताएगा कि पीएम श्री विद्यालयों एफएलएन की "लीडर स्कूल" के रूप में भूमिका कितनी प्रभावशाली है। यदि इन विद्यालयों के परिणाम अन्य विद्यालयों की तुलना में बेहतर पाए जाते हैं, तो यह इस मिशन की सफलता को दर्शाएगा। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन नीतिगत स्तर पर भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इससे शिक्षा अधिकारियों को वास्तविक डेटा के आधार पर यह समझने में मदद मिलेगी कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है, किस प्रकार की शिक्षक-प्रशिक्षण व्यवस्था प्रभावी है, और किन संसाधनों की पुनर्संरचना की आवश्यकता है। इसके माध्यम से यह भी ज्ञात होगा कि वर्तमान में प्रचलित एफएलएन डेटा (सरकारी डैशबोर्ड पर उपलब्ध) और वास्तविकता के बीच कितना अंतर है। इससे नीति-निर्माताओं को अधिक व्यावहारिक और ज़मीनी रणनीतियाँ तैयार करने में मदद मिलेगी। शोध का उपयोजनात्मक महत्व इस बात में भी है कि यह शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और स्थानीय शिक्षा प्रशासन के लिए एक मार्गदर्शक दस्तावेज के रूप में काम कर सकता है। यह शोध स्पष्ट रूप से इंगित करेगी कि एफएलएन मिशन के तहत कार्यान्वित गतिविधियाँ कितना वास्तविक प्रभाव छोड़ रही हैं। अंततः, यह अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता, समानता और उपलब्धता की दिशा में एक ठोस योगदान देने का कार्य करेगा, जिससे संपूर्ण प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक परिवर्तन की संभावना बढ़ेगी।

समस्या का कथन:

निपुण भारत मिशन: के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता का अध्ययन।

शोध उद्देश्य:

1. निपुण भारत मिशन के अंतर्गत पीएम श्री विद्यालय और परिषदीय विद्यालय के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) की स्थिति का अध्ययन करना।
2. पी. एम. श्री विद्यालय के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की निपुण भारत मिशन के अंतर्गत आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) की स्थिति का अध्ययन करना।
3. परिषदीय विद्यालय के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की निपुण भारत मिशन के अंतर्गत आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) की स्थिति का अध्ययन करना।
4. पी. एम. श्री विद्यालय एवं अन्य सरकारी विद्यालय के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की निपुण भारत मिशन के अंतर्गत आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) की स्थिति का तुलना करना।

शोध प्रविधि:

शोध विधि:

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

जनसंख्या एवं न्यादर्श:

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में लखनऊ जनपद के प्राथमिक स्तर के पीएम श्री विद्यालय और परिषदीय विद्यालय को लिया जाएगा। न्यादर्श के रूप में 1 पीएम श्री विद्यालय और 2 परिषदीय विद्यालय का चयन सुविधाजनक विधि द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण:

इस अध्ययन के लिए निपुण भारत मिशन के अंतर्गत आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के स्तर को जानने के लिए उपलब्धि परीक्षण शोधकर्ता द्वारा निर्मित एवं उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

इस अध्ययन में मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य और ग्राफ का उपयोग करके किया जाएगा। परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए टी-मान का उपयोग किया गया है।

शोध का परिसीमन :

इस अध्ययन में लखनऊ जनपद के पीएम श्री विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालय के केवल कक्षा 5 के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

सांख्यिकीय तकनीकें :

आंकड़ों का विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय

1. माध्य : पीएम श्री विद्यालय और परिषदीय विद्यालय के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) की स्थिति का अध्ययन करना।
2. मानक विचलन : आंकड़ों के प्रसार को समझने है।
3. टी- टेस्ट : दो समूहों (पीएम श्री विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालय) के बीच सार्थक अंतर जानने के लिए।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

इस अध्याय में शोध के अंतर्गत संकलित आंकड़ों का विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इस अध्ययन में कुल 47 प्रतिभागियों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया। अध्ययन के अंतर्गत विद्यार्थियों की उपलब्धि), साक्षरता एवं संख्यात्मकता का मूल्यांकन किया गया।

सभी परीक्षणों के लिए कुल अंक तैयार किए गए तथा दो समूहों (विद्यालय के प्रकार 1 एवं 2) के मध्य अंतर ज्ञात करने हेतु टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया।

उद्देश्य-1: निपुण भारत मिशन के अंतर्गत दोनों विद्यालयों (पी.एम. श्री एवं परिषदीय) के विद्यार्थियों की FLN स्थिति का अध्ययन करना।

तालिका 1: समग्र एफएलएन स्तर (सभी छात्र)

एफएलएन का स्तर	संख्या	प्रतिशत
निम्न	13	27.7%
मध्यम	20	42.7%
उच्च	14	29.8%
कुल	47	100%

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी मध्यम स्तर (42.6%) पर हैं। उच्च स्तर के विद्यार्थी 29.8% हैं, जबकि 27.7% विद्यार्थी निम्न स्तर पर हैं। इससे स्पष्ट होता है कि FLN की स्थिति औसतन मध्यम स्तर की है।

उद्देश्य-2: पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों की FLN स्थिति का अध्ययन करना।

तालिका 2: पीएम श्री विद्यालय के एफएलएन की स्थिति

मापदंड	छात्रों की संख्या	साक्षरता माध्य	संख्यात्मकता माध्य	एफएलएन माध्य
मान	24	44.67	30	74.67

उक्त तालिका में पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रदर्शन सभी क्षेत्रों में उच्च स्तर का पाया गया। विशेष रूप से साक्षरता एवं उपलब्धि में बेहतर परिणाम दर्शाते हैं कि यहाँ FLN का प्रभाव अधिक है।

उद्देश्य -3: परिषदीय विद्यालय के विद्यार्थियों की FLN स्थिति का अध्ययन करना।

तालिका 3: परिषदीय विद्यालय के एफएलएन की स्थिति

मापदंड	छात्रों की संख्या	साक्षरता माध्य	संख्यात्मकता माध्य	एफएलएन माध्य
मान	23	38.61	26.87	65.48

उक्त तालिका में परिषदीय विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कम पाया गया। विशेष रूप से साक्षरता एवं उपलब्धि में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है।

उद्देश्य -4:दोनों विद्यालयों के बीच FLN की तुलना करना।

तालिका 4: तुलना (पीएम श्री विद्यालय बनाम परिषदीय विद्यालय)

क्षेत्र	पीएम श्री माध्य	परिषदीय माध्य	टी - मान	पी- मान	परिणाम
एफएलएन	74.67	65.48	3.102	0.003	सार्थक ✓
साक्षरता	44.67	38.61	2.901	0.006	सार्थक ✓
संख्यात्मकता	30.00	26.87	1.930	0.060	सार्थक ✗

उक्त तालिका के अनुसार PM SHRI एवं परिषदीय विद्यालयों के बीच स्पष्ट अंतर पाया गया। उपलब्धि (Achievement) में PM SHRI का औसत अधिक है तथा $t = 3.102$ और $p < 0.05$ होने के कारण यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार साक्षरता (Literacy) में भी PM SHRI का औसत अधिक पाया गया तथा $t = 2.901$ और $p < 0.05$ होने से यह अंतर भी महत्वपूर्ण है, जो दर्शाता है कि इन दोनों क्षेत्रों में PM SHRI विद्यालयों का प्रदर्शन बेहतर है। इसके विपरीत, संख्यात्मकता (Numeracy) में PM SHRI का औसत थोड़ा अधिक होने के बावजूद $t = 1.930$ और $p > 0.05$ होने के कारण यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है।

निष्कर्ष एवं चर्चा :

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि निपुण भारत मिशन के अंतर्गत प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता (एफएलएन) का स्तर समग्र रूप से मध्यम पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि मिशन के प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव दिखाई दे रहा है, परंतु अभी सभी विद्यार्थियों तक अपेक्षित अधिगम स्तर पूरी तरह नहीं पहुँच पाया है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि साक्षरता एवं शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है। विशेष रूप से पी.एम. श्री विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रदर्शन परिषदीय विद्यालयों की तुलना में बेहतर पाया गया, जो यह दर्शाता है कि बेहतर संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक एवं प्रभावी शिक्षण विधियाँ अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

इसके विपरीत, संख्यात्मकता के क्षेत्र में अपेक्षित स्तर का सुधार नहीं पाया गया तथा दोनों प्रकार के विद्यालयों के बीच अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। यह इंगित करता है कि गणितीय अवधारणाओं के अधिगम में अभी भी कठिनाइयाँ बनी हुई हैं और इस क्षेत्र में अधिक प्रभावी एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि निपुण भारत मिशन ने साक्षरता एवं समग्र शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव डाला है, किंतु संख्यात्मकता के क्षेत्र में और अधिक सुदृढ़ प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि एफएलएन लक्ष्यों की पूर्ण प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके।

सन्दर्भ सूची:

1. फातिमा, एस०एम० (2024). निपुण भारत मिशन – अ क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ मीटिंग एफएलएन गोल्स ऑफ नैप–2020 इन यूपी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्चइन सोशल साइंस
2. नईम, बुशरा (2024). मिशन फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी येट टू बी अचीव. जर्नल ऑफ एजुकेशनल इनोवेशन एंड प्रैक्टिस
3. तुंगोए, चुमदेमो (2024). भारत में प्रारंभिक शिक्षा में पाठ्यक्रम और शिक्षण विकास: राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020 के अंतर्गत. इंडियन जर्नल ऑफ करिकुलम स्टडीज़
4. मोहोपात्रा, तपस्विनी, & सिंह, धर्मेंद्र (2024). शिक्षकों पर दीक्षा द्वारा दी गई एफएलएन प्रशिक्षण का प्रभाव: एक मूल्यांकन. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी स्टडीज़
5. वत्स, शुभम, & मलिक, नविता (2024). उत्तर प्रदेश में आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के प्रावधान का समग्र विश्लेषण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसेंट ट्रेंड्स इन मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च
6. स्वार्गियारी, ख्रितिश (2024). भारत में आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता: चुनौतियाँ, नीतियाँ और आगे का मार्ग. नेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड पॉलिसी रिसर्च
7. लक्ष्मण, राजेश (2022). प्रारंभिक बाल साक्षरता और संख्यात्मकता को बढ़ावा देना: आधारभूत शिक्षण के लिए प्रभावी रणनीतियाँ. जर्नल ऑफ एलेमेंट्री एजुकेशन
8. माझी, कल्याणी (2022). भद्रक जिले के सीआरसीसी और डीआरजी सदस्यों की क्षमता निर्माण हेतु एफएलएन सामग्री उपयोग पर प्रशिक्षण की प्रभावशीलता. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्चइन बिजनेस एंड मैनेजमेंट
9. थमरास्सेरी, आई., & श्रीलेख्मी, एम. (2025). लर्निंग बियोंड गाइडलाइन:अ क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ असर रिपोर्ट एंड एजुकेशन चैलेंजेस इन इंडिया. *आई मैनेजर जर्नल.*
10. चंद्रा, रीतु. (2024). शेपिंग फाउंडेशनल लर्निंग स्किल्स: ए हार्बिंजर टू द फ्यूचर ऑफ वर्क. ग्नोसी: एन इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ ह्यूमन थ्योरी. https://gnosijournal.com
11. महतो, एस., & ढिल्लों, एस. एस. (2025). पॉलिसी अलाइनमेंट फॉर फाउंडेशनल लर्निंग एक्सीलेंस: ए स्टडी ऑफ एनईपी 2020 एंड द निपुण भारत मिशन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च (आईजेएआर). https://www.researchgate.net
12. सरकार, बी., & गौर, पी. (2025). द सक्सेस ऑफ द निपुण भारत स्कीम: ए केस स्टडी ऑन फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी इन इंडिया. इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च. https://www.academia.edu
13. मकबूल, ए., शेख, ए. ए., & अन्नायत, आर. (2024). रीइमैजिनिंग फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी इन इंडिया: ए कॉन्सेप्चुअल एनालिसिस ऑफ द निपुण भारत मिशन इन द लाइट ऑफ एनईपी-2020.

14. डिपार्टमेंट ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन साइंस, यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर. https://lis.uok.edu.in
15. तिवारी, ए. एन., & कुवाड़, टी. बी. (2022). अंडरस्टैंडिंग फाउंडेशनल लैंग्वेज लिटरेसी इन कॉन्टेक्स्ट विद मिशन निपुण भारत 2021. ब्रिलियंट इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल साइंसेज (बीआईजेईएसएस). https://bijess.org
16. स्वार्गियारी, ख्रितिश. (2024). फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी इन इंडिया. एडटेक रिसर्च एसोसिएशन, यूएस.
17. घोष, ए., & सरकार, टी. (2023). "एस्टैब्लिशड बियॉन्ड एनी डिबेट...": फाउंडेशनल लिटरेसी एंड द मेकिंग ऑफ ए पॉलिसी प्रायोरिटी इन इंडिया. एजुकेशन पॉलिसी एनालिसिस आर्काइव्स.
18. सतपथी, डी., दिव्या, वी. एस., & प्रधान, डी. के. (2025). ए स्टडी ऑन इफेक्टिवनेस ऑफ एफएलएन वर्कबुक्स डेवलप्ड बाय एससीईआरटी, ओडिशा, इंडिया. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन. https://www.researchgate.net
19. सेठी, टी. पी., & बेहरा, एल. (2025). असेसमेंट ऑफ फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी स्किल्स अमंग स्टूडेंट्स इन कटक डिस्ट्रिक्ट, ओडिशा, इंडिया. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल साइंसेज. https://www.researchgate.net
20. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2021). निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश (निपुण भारत गाइडलाइन). नई दिल्ली